# भगवत् कृपा

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

| | | |
|---|---|---|
| वर्ष–15, अंक–1<br>रविवार, 26 जन.' 92 | सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी<br>जनवरी, 1992 | वार्षिक चन्दा–10.00<br>प्रति अंक : 1.00 |


## आओ, हम 'योगी शताब्दी' मनायें........

[योगी शताब्दी का मंगल वर्ष आ रहा है.....
तो, प.पू. काकाश्री द्वारा स्वयं के हीरक महोत्सव (60वीं जन्म जयंती) पर हमें पूछे नीचे के चार प्रश्नों पर
सतत् चौकन्नी निगाह रखकर भीतर में टटोलें....
और सुरुचि रखकर उसके मुताबिक वर्तने लग पड़े।
यही हमने सच्ची योगी शताब्दी मनाई मानी जाएगी।

महाराज, स्वामी, ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज, ब्र. स्व. योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी महाराज और प्रत्यक्ष स्वरूपों इस हेतु हमें खूब बल दें—यही प्रार्थना !]

''व्यवहारिक बुद्धि छोड़ कर—सचमुच,

- ☐ योगीजी महाराज को जो करना था उसके लिए हम तैयार (तत्पर) हैं?
- ☐ योगीजी महाराज का जो अभिप्राय था—जो भावना थी—वह हमारे दिल में अखंड रहती हैं?
- ☐ योगीजी महाराज की जो योजना थी कि पाँच पचास-दौ सौ जनों को तैयार करना—उसके लिए चौबीस घंटे में से एक घंटा दिल की सच्चाई से हमारा प्रयत्न (कोशिश) है?
- ☐ अन्दर-अन्दर दूसरों को उपदेश करते हैं—परामर्श देते हैं, पर वही स्वयं पर लागू करके हम वर्त पाते हैं?

**—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज**

# आया.....स्वरूपानुभूति दिन

हम सभी जानते हैं कि प.पू. काकाजी के अजोड़ समर्पण, अनुपम भक्ति को देखकर, गुरुहरि योगीजी महाराज ने खूब राजी होकर 3 फरवरी 1952 के महामंगलकारी दिन गोंडल अक्षरमंदिर में घनश्याम महाराज की मूर्ति के पास लक्ष करा कर–72 घंटे की समाधि कराई थी....तीन दिन तक प.पू. काकाजी का स्थूल शरीर धरती पर रहा, लेकिन उनकी चेतना को गुरुहरि योगीजी महाराज ने अपने साथ रखकर दिव्य स्वरूपानुभूति कराई.....गुरुहरि योगीजी महाराज ने स्वयं घनश्याम महाराज की तेजोमय मूर्ति के सामने खड़े होकर प्रार्थना करते हुए कहा–**'हे घनश्याम महाराज ! दादुभाई ने शास्त्रीजी महाराज को खूब राजी कर लिया है। हमारा वचन अध्धर झेला है....इन्हें अक्षरधाम की दिव्य समाधि करा के आपके हुबहु दर्शन करा दो.....**' प.पू. काकाजी के जीवन की यह परम मंगलकारी घड़ी थी...जो आज हम सबके लिए परम सौभाग्य की घड़ी बन गई.....

इतने में तीव्र प्रकाश की पुंज के बीच घनश्याम महाराज की मूर्ति की आँखें पटपटाने लगीं.....इन प्रकाशमय नेत्रों द्वारा मानो प.पू. काकाजी के हृदयाकाश में कोई अद्‌भुत दिव्य चेतना का संचार हुआ.....उसी समय प.पू. काकाजी ने तेज चीख मारी, उन्हें लगा कि उनका प्राण शरीर से अलग हो रहा है.....प.पू. काकाजी ने अनुभव किया कि उनके स्वयं के चैतन्य में से वासनाओं, प्रकृतियों और महत्वाकांक्षाओं की ग्रन्थियाँ पिघल-पिघल कर बाहर निकल रहीं हो.....

इस 72 घंटे की समाधि में प.पू. योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को सभी देवताओं, अवतारों व उनके धामों का दर्शन कराया.....फिर तीनों लोकों के ऐश्वर्य व कांचन, कीर्ति, कामिनी के असंख्य भंडार दिखाये। अतिशय अनुग्रह करके प.पू. काकाजी को उसमें लूभने भी नहीं दिया.....फिर नरक की ओर ले गये....नरक में बुरे कर्मों का फल भोग रहे अनेक जीवों की दयनीय दशा देखकर प.पू. काकाजी का हृदय द्रवित हो उठा। अंत में अक्षरधाम का दर्शन कराने ले गये....वहाँ भगवान पुरुषोत्तमनारायण की रसघनमूर्ति सब को सुख प्रदान कर रही थी.....वहाँ प.पू. काकाजी को जब योगीजी महाराज और श्रीजी महाराज के स्वरूप की एकता दिखाई पड़ी कि **अक्षरधाम के सिंहासन पर विराजमान सहजानंदस्वामी और गुरुहरि योगीजी महाराज में रंचमात्र भी फेर नहीं है,** तब प.पू. काकाजी को उसी क्षण दृढ़ प्रतीति हो गई कि अक्षरधाम में विराजमान महाराज ही धरती पर मानव देह में इस समय साक्षात् नारायण के स्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज के रूप में विचरण कर रहे हैं। ऐसा अलौकिक दर्शन करके प.पू. काकाजी के आनंद की तो सीमा ही नहीं रही.....कि अहोहो ! धरती पर मानव स्वरूप में प्रगट प्रभु का संबंध ! उनके दर्शन, सेवा, समागम का अनमोल लाभ !

अक्षरधाम के अर्चिमार्ग की इस अत्यंत विशिष्ट यात्रा के दौरान प.पू. काकाजी को सर्व प्रकार की वृत्ति से या प्राण के निरोध से पर के तत्त्व दर्शन का, अन्वय स्वरूप के रहस्यदर्शन का साक्षात्कार हुआ। प.पू. काकाजी को स्वयं की स्थूल देह का, सूक्ष्म शरीर का, अज्ञानमय स्वरूप का, प्रकाशित स्वरूप का और अंत में ब्रह्ममय–दिव्य तनु का, इस प्रकार पाँच स्वरूपों का दर्शन हुआ.....यह समाधि कोई प्रणालिकागत समाधि नहीं थी, बल्कि यह तो मूल अज्ञान को निवृत्तिवाली, चैतन्य प्रकृति के भागवती तनुवाली सच्ची और शाश्वत् ज्ञानसमाधि थी व यह

समाधि गुणातीतभाव की मंगलकारी अवस्था का प्रगटीकरण, आत्मा-परमात्मा का प्रगटीकरण, दृष्टा, दृश्य और दर्शन की एकता और वेदों के चार महा वाक्यों की पूर्णाहुति थी....महाराज के अपरिमित महिमा स्वरूप का और योगी बापा की अपरम्पार महिमा का यह साक्षात्कार था। जो सम्पूर्ण मरने तैयार हो, उसे ही माल मिलता है—लल्लु-पंगु का यह काम नहीं; वैसे ही जो अपना जो कुछ भी अत्यंत प्रिय हो उसे व अपने आपको प्रभु की प्रसन्नता के लिए ही याहोम कर देता है, उसे ही भगवान अपने स्वरूप का सम्यक दर्शन करा कर अपनी कल्याण पीढ़ी के वारिसरूप पसन्द कर लेते हैं। और.... प.पू. काकाजी ने बापा को राजी करने स्वयं को total मिटाया व यह अनमोल प्राप्ति की। वच. सा. 11 के मुताबिक प्रभु का ऐसा सेवक प्रभु जैसा ही समर्थ बनता है। वच. लोया 10 और 13 के मुताबिक वह प्रभु जैसी ही सम्पूर्णता व सामर्थ्य रखता है। प्रभु की भाँति स्वतन्त्र और निर्लेप बनता है। वह स्वतन्त्र रूप से विषय को ग्रहण करने व त्यागने का सामर्थ्य रखता है.....ऐसी उसकी सहजावस्था होती है, क्योंकि वह निर्विकल्परूप से प्रभु से अखंड जुड़ा होता है.....

साक्षात्कार की इस अनुभूति में बापा ने प.पू. काकाजी को मानो कल्पना से परे की स्वतन्त्रता, निश्चिंता, निडरता, दिव्यता आदि अनन्त कल्याणकारी गुण बक्षिश में दे दिये। एक समर्थ भ्रमरी ने स्वयं जैसी ही भ्रमरी तैयार कर दी.....साक्षात्कार की अनुभूति की यह भव्य फलश्रुति थी। वास्तव में सच्चा स्वरूपदर्शन—यही ब्राह्मीस्थिति—Divine body, bodiless divine consciousness का सच्चा भव्य दर्शन.....यह अनुभव प.पू. काकाजी के संबंध में आने वाले हम सबने किया है.....72 घंटे की इस दिव्य समाधि के पश्चात् प.पू. काकाजी आध्यात्मिक दृष्टि से मानो महामृत्यु को पाये और ब्रह्मस्वरूप बापा द्वारा ऐसे परब्रह्म के धारक का, इस लाडले मानसपुत्र का नवजन्म हुआ। प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के शब्दों में—**'बापा ने अपनी कल्याण पीढ़ी के वारिस का सर्जन किया।'** प.पू. काकाजी जब तक स्थूल स्वरूप में थे—आखिर सैकण्ड तक वे इसी ज्ञानसमाधि मे अखंड रहे और आज भी दिव्य स्वरूप में अपने संबंधवालों को वही सुख दे रहे हैं.....

गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा यह अनुपम साक्षात्कार कराये जाने के पश्चात् प.पू. काकाजी एकदम पूरे परभाव की भूमिका में ही जीने लग गये। वे कई बार कहते—**'मुझे समग्र सत्संग दिव्य दिखाई पड़ता है। किसी का रंचमात्र अभाव आता नहीं.....स्त्री-पुरुष का भेद ही दिखाई नहीं पड़ता, मुझे सभी ब्रह्मरूप दिखाई पड़ते हैं।** कैसी ! अलमस्त अवस्था होगी इस अनोखी विभूति की? इस प्राप्ति से संसार के समस्त सुख प.पू. काकाजी को तुच्छ लगने लगे। कईयों ने तो उन्हें पागल समझा.....पर प.पू. काकाजी की तो बस एक ही लगन थी कि किस प्रकार सबको गुरुहरि योगीजी महाराज के सच्चे स्वरूप की पहचान करा दूँ.....और यही एकमात्र उनके जीवन का उद्यम बन गया.....समग्र सत्संग समाज में प.पू. काकाजी डंके की चोट पर एक ही बात कहते—**'ये योगी बापा कोई सामान्य साधु नहीं, साक्षात् महाराज का स्वरूप हैं—शास्त्रीजी महाराज गये ही नहीं हैं, बल्कि बापा के रोम-रोम में अखंड प्रगट हैं—सब प्रकार से पहचान लेने जैसा औलिया पुरुष हैं.....उनको मजबूर करना, वश वर्तना वही भयंकर पाप है। ये अक्षरधाम के पुरुष होते हुए भी अत्यन्त ज्ञान गरीबी धारण करके बैठे हैं.....उनकी मर्जी—यही सबसे बड़ी सेवा है।'** सर्वप्रथम इस प्रकार के सचोट ज्ञान व सर्वोत्तम

गुरुभक्ति की ज्योति प.पू. काकाजी ने हरेक के हृदय में प्रज्जवलित की.....गुणातीत समाज पर उस अनोखे चैतन्यशिल्पी का यह कैसा ऋण है न ?

अत्यधिक आनन्द व परभाव की भूमिका में प.पू. काकाजी ने तब 1952 में गुरुहरि योगीजी महाराज को निम्नलिखित पत्र लिखा था.. इस पत्र को यदि हम पढकर गहराई से समझने का प्रयास करेंगे, तो हमें ख्याल पड़ेगा कि प.पू. काकाजी को अपने गुरु के प्रति कैसी दृष्टि थी.....आईये, हम सभी इस प्रसादी पत्र का दर्शन करके मनन-चिंत्वन करें और हमें मिले प्रगट स्वरूपों को पहचान कर अपनी भक्ति अदा करे..

❊ ❊ ❊ ❊

# ब्रह्मप्रवाह

गुरुहरि साक्षात् मूल अक्षरब्रह्म पू. योगीजी महाराज की पवित्र सेवा में–

दासों के दास सेवक का कोटि-कोटि दंडवत् प्रणाम सह जय श्री स्वामिनारायण !

चिंतामणि रूप देह पल झपकते ही निर्जीव हो जायेगी वह जानने-मानने पर भी चिंतामणि रूप प्रगट भगवान–सर्वोपरि, सर्वाधार, सर्व अवतारों के अवतारी, कारणों के कारण, कर्ता-हर्ता, सब कुछ करते हुए अकर्ता, अन्यथाकुर्तम्–अनन्त ऐश्वर्यों, सामर्थ्य, गुण, सत्ता, दिव्यता, प्रभुता, वाणी से पर के शब्दमात्र का, नाममात्र का जहाँ विलीनकरण होकर दिव्य रूप से–साकार रूप से अजोड़, अद्वितीय, अवर्णनीय स्वरूप श्रीजी महाराज के रूप में इस धरती पर जीवों का महा अज्ञानरूपी, अविद्यारूपी कारण शरीर को टालने, भक्तिमाता तथा देवताओं की याचना से सिर्फ भक्तों के ही लाड़ प्यार पूरे करने आये। उनको नहीं समझ पाने पर मूल अक्षर गुणातीतानन्दस्वामी जो श्रीजी का अन्वय स्वरूप है, उस परम चिंतामणि रूप अनादि के एक ही अजोड़ व आदर्शभक्त मूल अक्षर ने पहचान कराई और वही साक्षात् दर्शन-इन्द्रियाँ, अन्तःकरण और अनुभव उनके स्वरूपों में पहुँच कर पूज्य गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के दिव्य दर्शन–अक्षरधाम की निर्विकल्प समाधि के रूप में सर्व साधनों के अंत के रूप में, परिपूर्ण कृतार्थ मनवाने वाले साक्षात् मूल अक्षर गुणातीतानन्दजी–पूज्य मेरे जीवन प्राण-आत्मा-योगीजी महाराज द्वारा गोंडल में श्री छगनभाई, नारणभाई शेठ, बिन्दुबहन, झवेरकाका, वकीलस्वामी, निरन्नमुक्त वगैरे की समक्ष अप्रतिम आनन्द देकर करा दिया व पू. नंदाजी की साबरकाठा की सेवा का ऐसा कृपाफल दिया है–उसके बदले में मैं तुम्हारा गुलाम-दासों का दास सेवक सदा के लिए बिका हुआ ही हूँ। मुझे आपका ही गिनना। ऐसा अखंड निरन्तर दिव्य स्रोत का सुख, आनन्द, सद्विचार, शुभ संकल्प जो कि साक्षात् अक्षरधाम का ही व चैतन्य देह से भोगना व प्राप्त करना है–वह परमपद, परम कल्याण, परम सर्वोत्कृष्ट, सर्वजीव प्राणीमात्र के लिए की अपरिमित मंगलकारी भावना से भरपूर दिव्यता सतत् टिका रखने निर्गुणभाव का, निष्काम भावना का दर्शन टिका रखना–यही गद्गद कंठ से याचना

व नम्र प्रार्थना है। सत्संग दर्पण जैसा है। सबके स्वरूप भगवान खुले करते हैं। बुद्धि की चालाकियाँ छोड़कर खुद का ही गुरु बनकर, साक्षात् गुरु के ही चरणों में सर्वस्व का समर्पण, श्यामळाजी के मंदिर की गरुड़जी की मूर्ति के भाव के मुताबिक– निर्दोष-बुद्धि से छोटे-बड़े वचन में सम्पूर्ण विश्वास से, श्रद्धा से, गोपियाँ जैसी अतिदृढ़ प्रीति से लग पायें व दासभाव व दिव्यभाव अखंड सदा रहे ही; तो पल में ही वच. लोया 12 व सारंगपुर 10, कारियाणी-1 के मुताबिक निर्विकल्प स्थिति हो जाये। और वह अहमदाबाद पू. बापा के कमरे से '०' लिखकर सूर्यमंडल तक शून्य लगाये उतनी सत्ता शुरु से देते हैं। उस मूर्ति का ही सुख चरणों में रहकर लेते हुए अनन्त शून्य बढ़ते जायें व अपार दिव्यभाव, आनन्द के अस्खलित स्रोत का सुख बहते-भोगते प्राप्त करते जायें व अक्षरधाम रूप रहते समर्थ होने पर भी ज्ञान गरीबी धारण करके भक्ति करें। इस प्रकार मूल अक्षर से साधर्म्य को पाये सिवा-मन, कर्म, वचन से निर्दोषबुद्धि से सेवन करे बिना–सर्वज्ञ, अन्तर्यामी शास्त्रीजी महाराज को जाने सिवा पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन होंगे नहीं। हीरे से हीरा तोड़ पायेंगे। यह बात लिखी जाये पर उसका वर्णन नहीं कर पायेंगे। सचमुच कुछ पाने की इच्छा रखने वाले, गरज रखने वाले– गुरुजी में अति दृढ़ प्रीति रखने वाले हो–वह ही पचा सकता है.....बाकी को तो दस्त लग जायें और भगवान व इस साधु का अवगुण ले–द्रोह हो जाये– वह साक्षात् नरक में ही पड़े। यह बात खूब ही भेदपूर्ण व अटपटी है। समय को पहचानने वाला पा सकता है। द्वार खुले हैं। नया सूर्य गढ़डा में उगा है। आँख खोलकर देखने वाला देख सकेगा।

मनन द्वारा ज्योतिरूप–समझकर अखंड महद् ज्योतिरूप संत समागम से परम ज्योतिरूप होते ही पूरक-प्रेरक पोषक प्रतीतिरूप प्रगट परमात्मा पाया जा सकता है–यह निर्विवाद है। जिसे मानना हो, वह माने। यह तो गुणातीत ज्ञान की ज्योति जली है। वह किसी के बुझाने से बंद होने वाली नहीं है। सबको एक बार जलाकर ही रहेगी। जीवन क्रांति के बिना कुसंग के बंधन-भावनाएँ, ग्रंथियाँ-मान को, मोह की, अहम् की जाती ही नहीं है व साम्यावस्थारूप माया–तूर्यावस्था में परेशान करती ही है। इसलिए साक्षात् गुरुजी के चरण में दास का दास बनकर वर्तना-आज्ञा पालना-विश्वास रखना वहाँ परमपद-परमस्थिति और उसे गुणातीत रूप बनकर शास्त्रीजी महाराज के लीलाचरित्र, महिमा गाकर, हर रोज स्मृति करनी वही एकांतिक निर्गुणभाव की सर्वोत्कृष्ट–सर्वोत्तम भक्ति–जो कि अक्षरधाम में चैतन्य देह से करनी है। प्रगट भगवान सभी का ऐसा सुख-दर्शन दें और कुसंग की पहचान कराकर सच्चे सत्संगी बनाओ यही अभ्यर्थना।

**–प.पू. काकाजी महाराज**

अहमदाबाद, 21-2-1952

□ □ □ □ □

# अविनाशी आतमप्राण.....

## ( राग—देखा है पहली बार..... )

अविनाशी आतमप्राण, सुन ले हृदय की पुकार....(2)
प्रगट हो सर्वत्र आप, प्रत्यक्ष करूँ बार-बार.....(2)
सर्वोपरि सुख आधार कर ले आरत का स्वीकार
प्रगट हो सर्वत्र आप, प्रत्यक्ष करूँ बार.....बार

तेरा सूचन है! मुझे उसकी फिकर है
करूँ जीवन मैं ऐसा, तेरी रुचि वही है। (2)
''दो साधु, दो साथी उनसे करो दोस्ती''
मैं बिताऊँ जीवन.....एक बालक की भाँति.....
अविनाशी आतमप्राण.....

तेरा वचन है! मुझे उसकी लगन है
करूँ पूजन मैं उनका तेरी मूर्ति वही है। (2)
जो मेरी प्रकृति से भिन्न हो वो मेरे
साथी जीवन के.....मिट जाऊँ मैं वही पे.....
अविनाशी आतमप्राण.....

तेरा आशीष है! मुझे उस पर श्रद्धा है!
करूँ भजन मैं उसका तेरी खुशी वही है। (2)
'जो हुई है प्राप्ति! वो कभी न मिटेगी!'
करो नामरटण.....जादू होते रहेंगे.....
अविनाशी आतमप्राण.....

❄ ❄ ❄ ❄

## व्रतोत्सवसूची

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | दि. | 30.1.92 | गुरुवार | एकादशी, व्रत, गुरुहरि योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन |
| 2. | दि. | 3.2.92 | सोमवार | ब्र.स्व.प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन, दिन 2-2-92 रविवार को अशोकविहार नवनिर्माणधीन मंदिर में मनाएंगें |
| 3. | दि. | 9.2.92 | रविवार | वसंत पंचमी, श्री शिक्षापत्री जयंती, गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन |
| 4. | दि. | 15.2.92 | शनिवार | एकादशी, व्रत |

**PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,**
A 103, Ashok vihar-III, Swaminararan Marg. Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at **R.P. Printers,** Shahadra, Delhi-110032